प्रातःक्लास 21.2.68 ओमशांति पिताश्री शिवबाबा याद हैं?

ओमशांति। बच्चों को अपन को यहां नहीं समझना चाहिए। तुमको अभी मालूम हुआ है जो राज्य था जिसको रामराज्य वा सूर्यवंशी राज्य कहते हैं उसमें कितना सुख–शांति था। अभी हम फिर से देवता बन रहे हैं। आगे भी बने थे। हम ही सर्वगुण सम्पन्न, 16कला सम्पूर्ण निर्विकारी, दैवी गुण वाले थे। अभी हम अपने राज्य में नहीं हैं। रावण राज्य में हैं। हम अपनी राजधानी में बहुत सुखी थे। तो अंदर में बड़ी खुशी होनी चाहिए। निश्चय होना चाहिए ;क्योंकि तुम फिर से अपनी राजधानी में जाते हो। रावण ने तुम्हारा राज्य छीन लिया है। तुम जानते हो हमारा अपना सूर्यवंशी राज्य था। हम राज्य करते थे। अंदर में यह नशा चढ़ना चाहिए। हम राम राज्य के थे,दैवी गुण वाले थे। बहुत ही सुखी थे। फिर माया ने राज–भाग छीन लिया है। बाप आकर अपना और पराया राज्य का राज समझाते हैं। आधा कल्प तुम राज्य में थे फिर आधा कल्प रावणराज्य में रहे। बच्चों को यह निश्चय हो तो अंदर में यह खुशी भी रहे। चलन भी सुधरे। हम अपने राज्य में बहुत2 सुखी थे। फिर रावण ने हमारा राज्य छीन लिया है। अभी पारई(पराई) राज्य में हम दुःखी हैं। अभी अपने राज्य में अपन को सुखी समझते हैं ;परंतु यह तो अल्पकाल ,कागविष्टा समान सुख है। तो तुम समझते हो आधाकल्प सुख में थे। फिर माया से हराया है। तो तुम बच्चों को अंदर में बहुत खुशी रहनी चाहिए। अगर ज्ञान है तो। नहीं तो जैसे ठिक्कर बुद्धि हैं। अभी तुम बच्चों को पता है कल्प2 हम अपना राज्य लेते हैं। अभी भी जरूर अपना राज्य लेंगे। इसमें तकलीफ की तो कोई बात ही नहीं। राज्य लिया था फिर आधा कल्प राज्य किया। फिर रावण ने काया कला ही सारी चट कर दी। कोई अच्छे बच्चे हैं। चलन बिगर जाती है तो कहते हैं ना उनकी तो कला काया ही चट हो गई। यह है बेहद की बातें। समझाना चाहिए माया ने हमारी कला काया ही चट कर दी थी। हम गिरते आये हैं। ऐसे जब समझे तब दैवी गुण भी आवे। हम अपने राज्य में कितने सुखी थे। कितना प्यार, कितने दैवी गुण भी थे। यह भी जानते हो बेहद के बाप ने दैवीगुण सिखलाई है। आसुरी गुण हद के बाप सिखलाते हैं। अपन को बड़ा खुशी में चढ़ाना चाहिए। टीचर नालेज देते हैं तो स्टुडेट को खुशी होती है ना। यह है बेहद की नालेज। हम दैवी गुण वाले थे। अभी हमारे में कोई आसुरी गुण तो नहीं है अपन को देखना है। सब तो परिपूर्ण ....बनते हैं। नहीं तो फिर सज़ा खानी पड़े। सजायें खावें ही क्यों इसलिए बाप जिससे यह राज्य मिलता है .....याद करना है। दैवी गुण भी जो हमारे में थे वह फिर धारण करनी है। यथा राजा–रानी तथा प्रजा। सबमें .....थे ना। दैवी गुणों को तो समझते हो। अगर समझते ही न होंगे तो फिर लावेंगे कहां से?गाते भी हैं सर्वगुण सम्पन्न.....। तो यथा राजा–रानी तथा प्रजा.....। अभी पुरुषार्थ से ऐसा बनना है। बनने भी कितनी मेहनत होती है। क्रिमिनल आई हो जाती है। बाप कहते हैं अपन को आत्मा समझो तो क्रिमिनल .....उड़ जावेगी। युक्तियां तो बहुत ही बाप समझाते रहते हैं। दैवी गुण है तो देवता कहा जाता है। जिनमें .....नहीं है तो मनुष्य कहा जाता है। हैं तो दोनों ही मनुष्य। देवताओं को पूजते क्यों हैं? उनमें दैवी गुण है। हैं तो मनुष्य ;परंतु करतूत बंदर की है। कितनी शैतानी ,मारा–मारी ,झगड़ा आदि होता है। सतयुग में ऐसी बातें .....नहीं। यहां ही होता है। जरूर अपनी भूल होती है तब तो सहन करना पड़ता है। आत्माभिमानी नहीं तो सहन करना पड़ता है। तुम जितना आत्माभिमानी बनेंगे उतना ही दैवीगुण धारण होंगे। अपनी जांच करनी ....हमारे में दैवी गुण है?बाप सुखदाता है तो बच्चों को भी .....को सुख देना चाहिए। अपनी दिल से पूछना .....हम किसको दुःख तो नहीं देते हैं ; परंतु कोई2 की ऐसी आदत होती है जो दुःख देने बिगर नहीं सकते हैं। बिल्कुल सुधरते ही नहीं। जैसे जेल बर्ड्स होते हैं ना। वह जेल में ही अपने को समझते हैं। घड़ी2 ऐसे काम करेंगे जो जेल में जाना पड़े। समझते हैं वहां तो रोटी–टूकड़ सुख से मिलेगा।

भटकना तो नही पड़ता है। समझो , अकाल पड़ता है। कितने मनुष्य मर जाते हैं। जेल वालों को तो दो रोटी जरूर देनी ही पड़े। तो अपन को जेल में ही सुखी समझते हैं। बाप कहते हैं वहां तो जेल होती नहीं। पाप होते ही नहीं जो जेल में जाना पड़े। यहां जेल में सजा भोगते हैं। अभी तुम भी समझते हम सभी अपने राज्य में थे तो बहुत साहुकार थे। जो भी इस ब्राह्मण कुल वाले होंगे वह ऐसे ही समझेंगे। हम अपनी राजधानी में कितने सुखी थे। वहां तो प्रजा भी सुखी होती है। अभी माया के राज्य में सभी दुःखी हैं। हम अपना फिर से राज्य स्थापन कर रहे हैं। एक ही हमारा राज्य था जिसको देवताई राज्य कहा जाता है। ज्ञान मिलता है तो आत्मा को खुशी होनी चाहिए ना। जीवात्मा तो जरूर कहना पड़े। हम जीवात्मा जब देवी–देवता धर्म के थे तो सारे विश्व पर हमारा राज्य था। यह नालेज है ही तुम्हारे लिए। भारतवासी थोड़े ही समझते हैं हमारा राज्य था। हम देवी–देवता सतोप्रधान थे। अभी तमोप्रधान बने हैं। तुम समझते हो हम ही देवी–देवता थे। अभी फिर बनेंगे। भल विघ्न भी पड़ते हैं। यह भी कहां तक अखबारों में डालेंगे। तुम्हारी दिन–प्रतिदिन उन्नति होती जाती है। तुम्हारा नाम बाला हो जावेगा तो फिर समझेंगे यह तो बहुत अच्छी संस्था है। बहुत अच्छा कार्य करती है। रास्ता तो बहुत सहज बताती है। कहते हैं सतोप्रधान थे तो अपनी2 राजधानी में थे। अभी तमोप्रधान रावण राज्य में हो। और कोई अपन को रावणराज्य में समझते नहीं हैं। पत्थरबुद्धि हैं ना। अभी तुम समझते हो हम कितने स्वच्छ बुद्धि देवताएं थे। राज्य करते थे। अभी तुच्छ बुद्धि बन पड़े हैं। पुनर्जन्म लेते2 सतोप्रधान से तमोप्रधान ,पारस बुद्धि से पत्थर बुद्धि बन पड़े हैं। अभी हम फिर से अपना राज्य स्थापन कर रहे हैं। उछलना चाहिए ना। उस पुरुषार्थ में लग जाना चाहिए। कल्प2 लगे हैं,अभी भी लगेंगे। नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। तुम समझा भी सकते हो। भारतवासी तुम सतयुग में तुम रामराज्य में बड़े सुखी ,धनवान थे। सोमनाथ आदि की मंदिर बनाई। अभी अपन को तो देखो। अभी तुम बच्चे समझते हो हम श्रीमत पर अपनी राजधानी स्थापन कर रहे हैं। यह भी तुम घड़ी2 भूल जाते हो। नही तो वह अंदर में खुशी रहनी चाहिए। एक/दो को यही याद दिलाना है, मनमनाभव। बाप को याद करो जिससे ही हम राजाई लेते हैं। अंदर में कितनी खुशी रहनी चाहिए। हम अपना राज्य स्थापन कर रहे हैं। यह कोई नई बात नहीं है। यह ड्रामा बना हुआ है। कल्प2 बाप हमको श्रीमत देते हैं जिससे हम दैवीगुण धारण करते हैं। नही तो सजा खाकर भी कम पद पा लेंगे। यह बहुत भारी लाटरी है। अभी पुरुषार्थ कर उंच पद पाया तो कल्प–कल्पांतर उंच पद पाते रहेंगे। तुम समझते हो बाबा हमको राजाई लिए कितनी पुरुषार्थ कराते हैं। अभी तो बिल्कुल ही तुच्छ बुद्धि बन पड़े हैं। बाप तो रोज2 समझाते रहते हैं। कितनी सहज समझने की बातें हैं। प्रदर्शनी में भी तो यही समझाते रहे। तुम भारतवासी इस राजधानी के थे। फिर पुनर्जन्म लेते2 सीढ़ी उतरते तुम ऐसे ....हो। अभी फिर दैवी गुण धारण करो। कितना सहज समझाते हैं। सुप्रीम बाप, सुप्रीम टीचर ,सुप्रीम गुरू है ना। तुम कितने ढेर स्टुडेंट हो। दौड़ी पहनते रहते हो। बाबा लिस्ट भी मंगाते रहते हैं कितने ब्राह्मण बने हैं। कितने निर्विकारी पवित्र हैं। कोई ने पूछा था .....कोई हमसे पूछे तो क्या बतावें? तो बाबा ने सबकी लिस्ट मंगाई है। सभी भेज रहे हैं। ब्राह्मणियों जो समझती हैं वह लिख देते हैं। ब्राह्मणियों को भी बाबा समझते हैं कि किस प्रकार ही(की) है। सर्विसेबुल का नाम जरूर नम्बरवन में रखेंगे। ब्राह्मणी थर्ड नम्बर में भी होगी तो गुड़ जाने गुड़ की गोथरी जाने। बच्चों को समझाया है भृकुटि के बीच आत्मा रहती है। बाप परमात्मा कहते हैं मैं भी यहां आकर बैठता हूं। अपना पार्ट बजाता हूं। मेरा पार्ट ही है पतितों को पावन बनाने का। ज्ञान सागर हूं ना। बच्चे पैदा होते हैं। कोई तो बहुत अच्छे होते हैं। कोई बहुत खराब भी निकल पड़ते हैं। बाप कहते हैं यहां भी ऐसे ही है। कोई तो बहुत तंग करने वाले निकल पड़ते हैं। फिर आश्चर्यवत कथन्ती, सुनन्ती ,फिर भागन्ती हो जाते हैं। माया तुम कितनी प्रबल हो। फिर भी बाप कहते हैं भागन्ती हो कहां जावेंगे? यह एक बाप ही है तारने वाला। बाकी इतने सारे लाखों गुरू लोग हैं। वह जरूर डुबोने वोले ही ठहरे। कहां एक

कहां लाखों। एक बाप है सदगति तो बाकी सभी दुर्गति दाता हो जाते। इस ज्ञान को तो बिल्कुल ही जानते नहीं। जिसने कल्प पहले जाना है वही जानेंगे। इसमें अपनी चलन को बहुत सुधारना पड़ता है। सर्विस करनी पड़े। बहुतों को कल्याण करना है। बहुतों को रास्ता बताना है। बहुत मीठी2 जबान से समझाना है। तुम भारतवासी विश्व के मालिक थे फिर तुम इस प्रकार अपना राज्य ले सकते हो। यह तो तुम समझते हो बाप जो समझाते हैं ऐसा दूसरा कोई समझ न सकेंगे। दुनियां में कोई है नहीं। फिर भी चलते2 माया से हराय देते हैं। बाप खुद कहते हैं इन विकारों पर जीत पाने से तुम जगतजीत बनेंगे। यह जगतजीत बने हैं जरूर इन्होंने कर्म ऐसे किये हैं। बाप ने कर्मों की गति भी बताई है। रावणराज्य में कर्म विकर्म ही होते हैं। रामराज्य में कर्म अकर्म होते हैं। मूल बात है काम पर जीते तो जगतजीत बनेंगे। बाप को याद करो। अब वापस जाना है। हम अपना राज्य लेकर ही छोड़ेंगे। यह तो 100प्रतिशत सर्टन है ;परंतु राज्य यहां नहीं करेंगे। यहां राज्य लेते हैं। राज्य करेंगे अमरलोक में। अभी मृत्युलोक और अमरलोक के बीच में हो। यह भी भूल जाते हो इसलिए बाप घड़ी2 याद दिलाते हैं। अभी यह तो पक्का निश्चय है हम अपनी राजधानी में जावेंगे। यह पुरानी राजधानी खतम जरूर होनी है। नई दुनियां में जाने लिए हमको दैवी गुण भी धारण करनी है। अपन को आत्मा समझना है ;क्योंकि अभी ही हमको वापस जाना है। तो अपन को आत्मा भी उस समय ही समझना है। फिर कब वापस थोड़े ही जाना है। वहां तो 5विकार ही नहीं होंगे, जो हम योग लगावेंगे। योग तो इस समय ही लगाना होता है पावन बनने लिए। वहां तो मनुष्य सुधरे हुए ही हैं। फिर धीरे2 कला कम होती जाती है। यह तो बहुत सहज है। दैवी गुण भी धारण करनी चाहिए। कोध भी किसको दुःख देती है ना। मुख्य है देहाभिमान। वहां तो देहाभिमान होता ही नहीं। आत्माभिमानी होने क्रिमिनल आई नहीं होती है। सिविल आई बन जाती है। तुम जानते हो हम अपनी राजधानी में बड़े ही सुखी रहते हैं। कोई काम नहीं, कोध नहीं।.....इस पर तुम्हारा गीत भी बना हुआ है। अभी हम सो देवता बन रहे हैं। वहां यह विकार आदि होते नहीं। अपनी राज्य में हम बहुत सुखी थे। फिर रावण ने राज्य छीना है। अनेक बार यह हार और जीत हुई है। सतयुग से कलियुग तक जो कुछ हुआ है सो फिर रिपीट करना है। बाप वा टीचर के पास जो नालेज है वह तुमको सुनाते रहते हैं। यह रुहानी टीचर वंडरफुल है। उंच ते उंच भगवान उंच ते उंच टीचर भी है। उंच ते उंच देवता बनाते हैं। बाप ही आकर डीटी डिनायस्टी स्थापन करते हैं। तुम खुद भी देख रहे हो बाप कैसे डीटीज्म स्थापन कर रहे हैं। तुम खुद ही देवता बन रहे हो। अभी तो सभी अपन को हिंदू2 कह देते हैं। उन्हों को समझाया जाता है वास्तव में है आदि सनातन देवी देवता धर्म। और सभी का धर्म चलता रहता है। यह एक ही देवी–देवता धर्म है जो प्रायःलोप हो जाता है। यह तो बहुत ही पवित्र धर्म है। इन जैसा पवित्र धर्म कोई होता नही। पवित्र न रहने कारण कोई भी अपन को देवता कहलाने लायक नहीं है। तुम समझाया सकते हो तुम आदि सनातन पवित्र देवी देवता धर्म के थे। तब तो देवताओं को पूजते हो। काइस्ट को पूजने वाले क्रिश्चियन ठहरे। तुम भी देवताओं को पूजते हो तो देवता ठहरे ना। फिर अपन को हिंदू क्यों कहते हो? युक्तियुक्त समझाना चाहिए। सिर्फ कहेंगे हिंदू धर्म, धर्म नही है तो झगड़ा करेंगे। उनको क्या पता? बोलो हम आदि सनातन देवी देवता धर्म के थे ....मनुष्य कुछ समझे। आदि सनातन हिंदू धर्म तो है नहीं। आदि सनातन अक्षर ठीक है। सिर्फ देवता के बदली हिंदू कहलाते हैं ;क्योंकि पवित्र थे। यह है अपवित्र हैं इसलिए अपन को देवी–देवता कह न सके। कल्प2 ऐसे होता है। इनके राज्य में कितने साहुकार थे। अभी तो कंगाल बन पड़े हैं। देवी–देवता पदमपति थे। बाप जो समझाते हैं वह अच्छी रीत धारण भी करना है। .....दिन प्रतिदिन युक्तियां तो बहुत अच्छी मिलती रहती हैं। पूछा जाता है तुम सतयुग के रहने वाले हो या कलियुग के? कलियुग के हो तो जरूर

नर्कवासी हो। सतयुग में स्वर्गवासी होते हैं। ऐसे तुम समझावेंगे तो आपे ही लज्जायमान हो जावेंगे। जरूर प्रश्न पूछने वाला खुद ट्रांसफर कर असुर से देवता बना सकते हैं। और तो कोई भी पूछ भी न सके। वह भक्तिमार्ग तो बिल्कुल ही अलग है। भक्ति का फल कहां है? वह है ज्ञान। सतयुग–त्रेता में भक्तिक होती नहीं। ज्ञान से दिन ,आधा कल्प, भक्ति से रात आधा कल्प। वहां भक्ति हो नहीं सकती। मानने वाले मानेंगे, न मानने वाले कब मानेंगे नहीं। कई फिर न ज्ञान को ,न भक्ति को मानते हैं। सिर्फ पैसा कमाना ही जानते हैं। गवर्मेंट भी खुद कितना झूठ, पाप ,कितनी रिश्वत ,एडल्टेशन करती है। जितने बड़े खरीदारी उतने बड़े ठगी। ठगी बिगर पैसे कहां से आये? गवर्मेंट हो इन्कम टैक्स कहां से मिले? यह रचना सारी जैसे रची हुई है चलती रहती है। कल्प2 ऐसे कलियुगी बाजार चलती है। अभी तुम अपना राज्य स्थापन कर रहे हो बाप के श्रीमत पर। आधाकल्प हम राज्य लेते हैं फिर गंवाते हैं। यहां तो ठिक्कर2 पर घर2 में झग(ड़े) पड़े हैं। युक्ति से समझाना होता है। बाबा प्वाइंट तो सब देते रहते हैं। भारत में तुम्हारा राज्य था। दूसरा कोई राज्य नहीं जो क्रिश्चियन ने लूटा। नहीं। यह रावण ने छीना है। अभी रावण राज्य है। रावण जीता है ,मरता ही नहीं। मनुष्यों की बुद्धि में नहीं आता है हम क्या करते हैं। रावण को मारा फिर बनाते क्यों हैं? वर्ष2 बनाते ही रहते हैं। ऐसे और कोई मनुष्य है क्या जिसका बुत बनाते ही आये? यह रावण कौन है किसको भी पता नहीं है। तुमको भी पता नहीं था। खुद भी कहते हैं हे पतित–पावन आओ हमको पावन बनाओ तो जरूर पावन बन राज्य करेंगे ना। मुक्तिधाम बैठ थोड़े ही जावेंगे। पावन राज्य था। अभी पतित राज्य है। शर्म आना चाहिए ना ;परंतु माया के राज्य में कितने शाद–मानी आदि होते रहते हैं सभी तरफ। सिर्फ इंडिया में नहीं। महर्षि आदि सब कहां से आये? देवी देवताएं सो फिर असुर बन जाते हैं। इनमें सन्यासियों का भी धर्म आ जाता है। सन्यासी .....क्या–क्या न करते हैं। कहते हैं हमने घर–बार छोड़ा है ;परंतु अभी तो महल में बैठे हैं। महर्षि को एरोप्लेन है। सिखलाते कुछ भी नहीं। घूमता–फिरता रहता है। यह भी रावणराज्य का मर्तबा है ना। रावण बहुत पहलवान है ना। तो यह भी पहलवान है। यह सब समझने की बातें हैं। विचार–सागर–मंथन कर धारण करनी है। अंदर में समझना चाहिए अगर हम सर्विस नहीं करते हैं तो उंच पद नहीं पा सकेंगे। बाकी 7/8वर्ष है। तुम बच्चे अखबार आदि पढ़ते नहीं हो। बाहर में कितना हंगामा होता रहता है अखबार से मालूम पड़ जाता है। एक/दो को डराते रहते हैं। वह कहते हैं हम अमेरिका को उड़ावेंगे। वह कहते हैं हम रशिया को उड़ावेंगे। हैं भाइ। एक/दो को मदद देने लिए तैयार भी बैठे हैं। बारूद सबको सप्लाई करते रहते हैं। यह कोई रखने की चीज तो है नहीं। यह सब अभी तैयार होते रहते हैं। यह बम्स आदि भी .....वर्ष के अंदर ही निकली है। आगे यह थे नहीं। 100वर्ष तो बहुत हैं। 100वर्ष में तो सारी दुनियां नई बन सकती है। आजकल मकान 3/4मास में बनाते हैं। कोई2 मकान को एक वर्ष भी लग जाते हैं। बहुत आदमी (हों) तो जल्दी भी बन सकते हैं। तुम तो अपनी राजधानी स्थापन करते हो। वहां तो सोना ही सोना है। जैसे .....की ईंटें हैं वैसे सोने के। उनको तो गर्म भी नहीं करना पड़ता है। अभी मशीनरी से कितना काम ..... है। इमिटेशन पत्थर कितने निकलते हैं। क्या2 बनाते रहते हैं। यह सब हुनर फिर वहां भी चलेगा ना। हुनर (को) ही साइंस कहते हैं। यहां भी बत्तियां ऐसी होती हैं जो बाहर से कुछ दिखाई न पड़े रोशनी ही रोशनी होती है। तो यह हुनर सब वहां चलेगा। भल मनुष्य थोड़े होंगे ;परंतु अकलमंद होंगे। यथा राजा–रानी तथा प्रजा पारसबुद्धि होंगे। रावणराज्य में बड़ा युक्ति से .....को सम्भालना होता है। मनुष्य ऐसे हैं जो मारने में भी देरी नहीं करते। तुम राक्षस राज्य के बीच में हो। हंस मोती चुगते हैं,बगुले गंद। तुम संगमयुग पर हंस बन रहे हो ऐसा बनने के लिए। तुम बच्चों को बड़ा नशा रहना चाहिए बाप हमको राजाई प्राप्त कराने की युक्ति बताते हैं। अच्छा राज्य पाने और गंवाने वाले बच्चों प्रति रुहानी बापदादा का यादप्यार गुडमार्निंग। ओमशांति।